3 कब मैं साधु स्वरूप धरूँगा...

कब मैं साधु स्वरूप धरूँगा।।
बन्धु वर्ग से मोह त्याग के, जनकादिक जन सौ उबरूँगा।
तुम जनकादि देह सम्बन्धी, तुमसों मैं उपजूँ न मरूँगा।।1।।
कब मैं साधु स्वरूप धरूँगा।।

श्री गुरु निकट जाय तिन वच सुन, उभय लिंग धर वन विचरूँगा।
अन्तर मूर्छा त्याग नग्न ह्वै, बाहिर ताकी हेत हरूँगा।।2।।
कब मैं साधु स्वरूप धरूँगा।।

दर्शन ज्ञान चरण तप वीरज, या विधि पंचाचार चरूँगा।
तावत निश्चल होय आप में, पर परिणामनि सौ उबरूँगा।।3।।
कब मैं साधु स्वरूप धरूँगा।।

चाखि स्वरूपानन्द सुधारस, चाह दाह में नांहि जरूँगा।
शुक्ल ध्यान बल, गुण श्रेणी चढ़ि, परमातम पद सौ न टरूँगा।।4।।
कब मैं साधु स्वरूप धरूँगा।।

काल अनन्तानन्त, यथारथ रह हूँ, फिर न विभान फिरूँगा।
'भागचन्द' निर्द्वन्द निराकुल, यासौं नहिं भव भ्रमण करूँगा।।5।।
कब मैं साधु स्वरूप धरूँगा।।

मैं दिगम्बर मुनिदशा कब धारण करूँगा, ऐसे पवित्र विचार भव्य जीवों के चित्त में सदा चलते रहते हैं।।टेक।।

मैं मित्र–बन्धुओं से मोह त्यागकर संसार और संसारीजनों से कब मुक्त होऊँगा। इस देह को जन्म देने वाले हे माता–पिता! अब मैं जन्म–मरण धारण नहीं करूँगा।।१।।

मैं वीतरागी मुनिराज के पास जाकर उनके वचनों को सुनकर द्रव्यलिंग और भावलिंगमयी मुनिस्वरूप धारणकर जंगल में विचरण करूँगा। मैं रागादि भाव का अभाव कर नग्न मुद्रा धारणकर समस्त कर्मों का नाश करूँगा।।२।।

मैं दर्शनाचार, ज्ञानाचार, चारित्राचार, तपाचार, वीर्याचार इन पाँच आचारों का नियमपूर्वक पालन करूँगा । मैं आत्मस्वरूप में निश्चल होकर अपने स्वरूप में पर के प्रति समस्त राग भाव का नाश करूँगा।।३।।

मैं अपने आत्मा के ध्यान रूप आनंद अमृत का पान करके, इच्छा–वाँछा रूपी अग्नि में नही जलूँगा एवं शुक्ल ध्यानपूर्वक गुणश्रेणी चढकर अनंत काल के लिये परमात्म पद को प्राप्त करूँगा और फिर कभी भी संसार में नही आऊँगा।।४।।

कविवर भागचन्द जी कहते हैं कि मैं बिना किसी बाधा के आकुलता रहित सिद्ध पद में अनन्त काल तक रहूँगा और फिर कभी भी स्वर्ग आदि गतियों में परिभ्रमण नहीं करूँगा।।५।।